Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 5, Sept-Oct – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 03/10/2019 Accepted on : 14/10/2019 Publication Date: 30/10/2019

तीसरी ताली : तृतीय लिंगी समाज का यथार्थ

बेबी विश्वकर्मा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, दोइमुख-791112

Email- biswakarmababy95@gmail.com

शोध सार : साहित्य और समाज का संबंध अन्योनाश्रित है। साहित्य मात्र कल्पना की उड़ान नहीं है। साहित्यकार अपने समय की सारी रूढ़ियों, परिस्थितियों, समाज का बदलता स्वरूप, समाज में हो रहे उथल-उथल सभी का कलात्मक अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार करता है कि वह पाठक के मर्मस्थल को भेद जाता है। आज बहुत से साहित्यकार एवं बुद्धिजीवी किन्नरों के अस्तित्व के संघर्ष में योगदान दे रहे हैं तथा 'किन्नर विमर्श' नाम से एक साहित्यिक विमर्श ही चल पड़ा है। प्रदीप सौरभ इन्हीं साहित्यकारों में से एक हैं, जिनके उपन्यास 'तीसरी ताली' ने हिन्दी साहित्य जगत में हलचल मचा दिया। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से अवहेलित वर्ग के अनछुए अंधकार पहलुओं को प्रकाश में लाया है।

बीज शब्द : किन्नर, शोषण, उपेक्षा, लैंगिक भिन्नता, हाशिए।

शोध उद्देश्य :

1. भारतीय समाज में किन्नरों की स्थिति एवं उनके संघर्ष पर प्रकाश डालना।
2. 'तीसरी ताली' में अभिव्यक्त किन्नर के जीवन से जुड़े समस्याओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध-कार्य में निम्नलिखित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है –

1. पुस्तकालय में प्राप्त ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्रियों का अध्ययन।
2. इंटरनेट पर उपलब्ध संबन्धित शोध सामग्रियों का अध्ययन।

प्रस्तावना :

भारतीय जन किन्नरों से शुभाशीष की मांग तो कर लेता है परंतु बदले में थोड़ी-सी सहानुभूति और संवेदनशीलता का प्रदर्शन नहीं कर पाता। इस वर्ग के प्रति हमारे समाज में एक अजीब-सा डर, घृणा, शंका और अवज्ञा का माहोल है। किन्नर अपने शारीरिक बनावट के कारण न तो पूर्णतः स्त्री बन पाये और न ही पुरुष। इसीकारण समाज ने उन्हें पूर्ण व्यक्ति के दर्जा देने से ही इनकार कर दिया। लेंगीक भिन्नता के कारण किन्नर समुदाय हाशिये के उपेक्षित जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। आधुनिक और प्रगतिशील कहलानेवाला हमारा समाज आज भी उदारतापूर्वक उन्हें अपना नहीं पाया है। प्रदीप सौरभ द्वारा रचित उपन्यास 'तीसरी ताली' तथाकथित सभ्य समाज की इसी संवेदनहीनता, क्रूरता, किन्नर जीवन

की त्रासदी, शारीरिक शोषण, सामाजिक पारिवारिक उपेक्षा, मुख्यधारा में शामिल न हो पाने के कारण जीविका के चाह में दर-बदर भटकते और वेश्या-वृत्ति के गर्त में धकेले गए किन्नर समुदाय की व्यथा-कथा है।

किन्नरों की ताली से या तो यह समाज आतंकित होता है या फिर विरक्त। उन तालियों के अनगुंज के पीछे छिपे दर्द की गहराई तक उनकी संवेदना नहीं उतर पाती। एक किन्नर का सम्पूर्ण जीवन उपेक्षा, घृणा, अवज्ञा, शर्मिंदगी, तिरस्कार और अवज्ञा से भरा होता है। उनके परिवारवालें, यहाँ तक कि उनके माता-पिता भी यह बताने से कतराते हैं कि वह उनके परिवार का हिस्सा है। कितनी दुख की बात है कि दूसरों के जन्म अवसर पर बधाई देनेवाले, नाच-गान कर झूमनेवाले किन्नरों के जन्म पर केवल शोक ही मनाया जाता है। जन्मोपरांत या तो उसे लावारिस छोड़ दिया जाता है या फिर सदा के लिए त्याग कर किन्नर समुदाय को सौप देते हैं। इसके विपरीत यदि कोई परिवार उन्हे अपने सिने से लगाए रखना चाहता है, अच्छी परवरिश देना चाहता है, तब यह समाज उस परिवार को भी उत्पीड़ित कर उसके आत्मविश्वास को चकनाचूर कर देता है। ऐसी ही हालत सिधार्थ एनक्लेव के गौतम साहब का भी था- "गौतम साहब की चाल में जो अकड़ आई थी, वह ढीली पड़ने लगी। मोटे चश्मे के पीछे चमकनेवाली आँखें भी झुक गयी। वे हमेशा झुंझलाए-झुंझलाए से दिखते। अजीब तरह की चिंता उनके माथे पर दिखती।... बेतरतीबी ऐसी की गौतम साहब कभी मोजा पहनना भूल जाते तो कभी उनकी कमीज पीछे से निकली होती या फिर आगे से"।[i] गौतम साहब विनीत के पालन-पोषण में कोई कमी नहीं रहने देना चाहते थे परंतु समाज उनकी मनःशक्ति को शनै: शनै: क्षीण करती जा रही थी। समाज की सारी मानवीय विशेषताएँ किन्नरों की यौनिक भिन्नता के समक्ष आकर धूल हो जाती है। केवल और केवल लिंग के धरातल पर यह समाज उसे मुख्यधारा से बेदर्दी से बाहर फेंक देना चाहता है। शिक्षा, रोजगार, सामाजिक प्रतिष्ठा इन सभी से समाज उन्हे वंचित रखना चाहता है। शिक्षा संस्थाओं को भारतीय समाज विद्या का पवित्र मंदिर मानता है। परंतु यहाँ भी किन्नरों को अपमानित ही होना पड़ता है। छठी कक्षा के बाद निकिता को स्कूल में केवल इसीलिए दाखिला नहीं मिल पाता क्योंकि वह एक किन्नर है। निकिता कभी अपने किन्नर अस्तित्व को स्वीकार नहीं पायी। अपना अधूरापन उसे खलता था। सामान्य जीवन व्यतीत न कर पाने की छटपटाहट से मुक्ति के लिए वह आत्महनन का पथ चुनती है। ऐसे न जाने कितने की किन्नर हैं जो समाज के उपेक्षा और संवेदनहीनता के कारण हीनता से भरकर आत्महत्या कर लेते हैं। आर्थिक दुर्दशा, अशिक्षा, हर क्षेत्र पर समाज से मिलते दुत्कार, अज्ञानता तथा तकनीकी अकुशलता इन्हे पारंपरिक नाच-गान के धंधों में उलझा रखता है अथवा देह व्यवसाय के लिए बाध्य करता है।

जिस प्रकार स्त्री को महिमामंडित कर उसका शोषण किया जाता है ठीक उसी प्रकार किन्नरों को भी महिमामंडित कर लिंगधारी समाज उन्हे छलावे में रखता है। कोई उन्हे अरवाण का वंशज मानता है तो कोई उन्हे कृष्ण का मोहिनी अवतार। ईश्वर का हवाला देकर यह तक भी कहा जाता है कि किन्नरों को श्री राम का वरदान है जिसकारण ये अपना घर परित्याग कर नाच-गान कर बधाई देते फिरते हैं। इसी छलावे में आकर डिम्पल जैसे किन्नर परंपरागत पेशों में ही अपने को सीमित रखना चाहती है। हिजड़े हमारे आस-पास मौजूद हैं फिर भी हम उनके सामाजिक संस्कारों से अनजान हैं। उनके नाचते-गाते या फिर बस, ट्रेन आदि में गालियाँ बरसाती छवि ही जनमानस के मन में सामान्यतः उभरती है। परंतु हिजड़ों की अन्तर्मन की हल-चल को यह समाज भाँप नहीं पाता। सभ्य समाज का दोमुंहापन देखिए- एक तरफ हिजड़ों को रामवरदानी कहता है तो दूसरी ओर उनकी अंतिम यात्रा तक देखना आम जनों के लिए अशुभ माना जाता है। "भोपाल

में मशहूर है कि ऐसी ही जिन्न की सवारी आजादी से पहले पाँच पुलिसवालों ने देखी थी, तो वे पागल हो गए थे। जिन्नों की सवारी शलभ ने भी देख ली थी। अब शायद उसकी पागल होने की बारी थी।...क्रास पर सुरैया का शव लटका था। यह उसकी अंतिम यात्रा थी। उसे पुराने कब्रिस्तान में ले जाया जा रहा था लोगों की नज़रों से बचा कर ताकि कोई तीसरी योनि की अशुभ यात्रा न देख सके...इस योनि के अमंगल की छाया किसी पर न पड़े।"[ii] हिजड़ों की अस्तित्व एवं उनके समाज को लेकर आशंका, अजनबीपन एवं अंधविश्वास भरे माहौल को बनाए रखने के पीछे व्यवस्था का प्रपंच काम कर रही है ताकि वे मुख्यधारा के समाज से सदेव अलग-थलग रहें।

समाज की अवज्ञा के साथ साथ किन्नरों की अज्ञानता भी उनकी दुर्दशा के लिए दायी है। 'तीसरी ताली' उपन्यास में लेखक किन्नरों की परंपरा से बंधे रहने की इस रूढ़िवादिता की ओर संकेत करते हैं। अमेरिकी मोबाइल कंपनी द्वारा मिले नौकरी के प्रस्ताव को ठुकराते हुए नीलम, रीना और डिम्पल के डेरों के किन्नर कहती हैं- "साहब हम अपने नाच-गाने से ही खुश हैं। हमें आपकी नौकरी नहीं करनी। हम तो भगवान राम के आदेश पर सदियों से नाच-गाकर अपनी रोटी कमा रहे हैं। हमें भी एकदिन ऊपर उनके पास जाना है। वहाँ जाकर हम क्या जवाब देंगे"।[iii] किन्नर समाज का बहुत बड़ा अंश अभी भी अपने अधिकारों के प्रति उदासीन है। महत्वकांक्षा और जागृति की कमी ने उन्हे यथास्थिति में जकड़े रखा है।

किन्नरों की जीवन कथा अत्यंत करुण है। जिंदगी भर वे निर्वासित, शापित जीवन काटते हैं। बुनियादी सुविधाओं के लिए भी उन्हे पल-पल संघर्ष करना पड़ता है। मुख्यधारा के पूर्ण व्यक्ति होने के गर्व से गर्वित सदस्य इतना अधम और हवसी है कि जिस किन्नर को लेंगीक रूप से विकलांग मान दरकिनार करता है अवसर मिलने पर उसी किन्नर का शारीरिक शोषण भी कर लेता है। 'तीसरी ताली' के मणि कुमार जैसे कई पात्र असल जिंदगी में भी मौजूद हैं जो दुर्भाग्यवश तथाकथित सभ्य समाज के हवस का शिकार बन जाते हैं। किन्नरों की पहचान ही उनके लिए अभिशाप साबित होती है। कैसी विडंबना है कि एक तरफ अस्तित्व रक्षा की अनेक आंदोलन चल रही है तो दूसरी ओर किन्नर अपने अस्तित्व से ही परेशान है। उनका पहचान ही उनका दुश्मन है, जिससे वे भागना चाहते हैं। विजय भी ऐसा ही एक पात्र है जो अपने फोटोग्राफी केरियर में कामयाब होने के लिए अपने किन्नर होने के सच को दुनिया से छुपाए रखता है क्योंकि वह जानता है यह समाज किन्नर को सदा पैरों तले रोंदता आया है। जो वर्ग समाज के जेंडर-नियमों के सीमा में नहीं समाता, उसे प्रताड़ना के अलावा कुछ भी नहीं मिलता।

निष्कर्ष :

मुख्यधारा समाज के लिए 'हिजड़ा' शब्द एक भद्दी गाली है जो उनके वीरता पर प्रश्न खड़ा करता है। चूंकि किन्नर प्रजनन में अक्षम हैं संभवतः इसीलिए उन्हे मुख्यधारा से वंचित कर दिया गया था क्योंकि प्राचीन काल में वंश वृद्धि मानव जीवन का अतीव महत्वपूर्ण लक्ष्य था। परंतु अब समस्या प्रजनन की रह नहीं गयी है। विज्ञान इतना आगे बढ़ चुका है कि कृत्रिम साधनों से भी प्रजनन संभव हो चुका है। जनसंख्या विस्फोट तो अब एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। अतः अनावश्यकीय मान्यताओं को सदेव के लिए ढोये रखने का कोई औचित्य नहीं है। गर्भवस्था में हुए लेंगीक गड़बड़ी के कारण मनुष्य के एक वर्ग को इस प्रकार शापित जीवन जीने के लिए बाध्य कर देना कतई उचित नहीं है। किन्नर मानसिक

एवं शारीरिक तौर पर पूरी तरह से स्वस्थ हैं। यदि उन्हे व्यक्तित्व विकास का समुचित अवसर दिया जाए तो वे अपने सामर्थ्य को सिद्ध करने में सक्षम हैं। इस बात की पुष्टि प्रदीप जी भी विनीता, सुप्रिया कपूर जैसे पात्रों द्वारा करते हैं जो अनेक बाधाओं को लांघते हुए कामयाबी का मुकाम हासिल करते हैं। हिजड़ों को कानूनी अधिकार तो प्राप्त है परंतु सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं है। जिस कारण वे शोषण का शिकार बनते हैं। समाज की संकुचित मानसिकता, अपमानजनक व्यवहार हिजड़ों की व्यक्तित्व विकास की संभावनाओं को अवरोधित करता है। जब तक समाज की मानसिकता परिष्कार नहीं होगी, किन्नरों की मुक्ति पूर्णतः संभव नहीं है।

संदर्भ सूची :

[i] सौरभ प्रदीप, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति 2018, पृ 40

[ii] वही, पृ 149

[iii] वही, पृ 180

iv मेहरा, दिलीप, हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.